Today's Poem – 26.07.2014

बाबा कहते हैं ड्रामा की यथार्थ नॉलेज से ही तुम अचल, अडोल और एकरस रह सकते

माया के तूफान तुम्हें हिला नहीं सकते

देवताओं जैसे सदा हर्षित रहना

कोई भी बात हो, सदा मुस्कुराते रहना

कभी उदास नहीं होना

बाप समान गुस्सा कभी नहीं करना

इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर पवित्र बन स्वयं का श्रृंगार करना

कभी भी माया की धूल में लिथड़कर श्रृंगार नहीं बिगाड़ना

अमृतवेले से लेकर रात तक अपने भिन्न-भिन्न भाग्य को स्मृति में लाना

वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य सदा यही गीत गाते रहना

ब्राह्मण जीवन में खुशी का जाना असम्भव है

भल शरीर चला जाए लेकिन खुशी जा नहीं सकती

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!